

## स्वैच्छिक विज्ञान शिक्षक मंच: एक पहल, बेहतर विज्ञान शिक्षण की ओर

अलग अलग नीतियों और अनुसंशाओं ने शिक्षक शिक्षा में ऐसी बातों के समावेश की अनुसंशा की है जो एक अलग प्रकार के शिक्षक शिक्षार्थियों की कल्पना करती हैं। जैसे, वे अधिगम को व्यक्तिगत अनुभवों से अर्थ निकालने की प्रक्रियाँ मानें, ज्ञान को पाठ्यपुस्तक प्रदत्त बाह्य यथार्थ के रूप में ही न देखे वरन उसे शिक्षण – अधिगम के साझा संदर्भों और व्यक्तिगत अनुभवों द्वारा गढ़ा हुआ मानें इत्यादि। इसके लिए जिले के विद्यालयों में बेहतर अध्ययन अध्यापन हेतु किए जा रहे प्रयासों में समय समय पर शिक्षकों की पेशेवर क्षमतावर्धन भी शामिल है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, इस बात को जोरशोर से रखती है कि माध्यमिक शाला स्तर पर विज्ञान का परिचय एक संयुक्त विषय के रूप में दिया जाना चाहिए। इस स्तर पर पढ़ाने के लिए चुनी गयी वैज्ञानिक अवधारणाएँ बच्चों के अनुभव जगत से संबन्धित हो तथा प्रौद्योगिकी के व्यावहारिक ज्ञान को भी तवज्जो देता हो।

सवाल ये उठता है कि हमें विज्ञान सीखने और सिखाने में दिक्कत क्यों आती है? अगर हम गहराई से इसका विश्लेषण करते हैं तो कुछ बुनियादी कारण सामने आते हैं:

1. हम अक्सर यही सोचते हैं कि विज्ञान तथ्यों का भंडार है और अगर इन तथ्यों को किसी तरह से समझ लिया जाए तो विज्ञान सीखने का काम हो जाता है।

इसमें कुछ सच्चाई तो है पर इस सच्चाई के साथ हम बहुत आगे नहीं जा पाते। कारण वही कि हम तथ्यों को समझने के बजाय उन्हें याद

कर डालते हैं और वंचित रह जाते हैं उन तर्कों से रूबरू होने से, जो विज्ञान को सही मायने में रुचिकर बनाते हैं।

2. हम अधिकतर कुछ खास स्रोतों तक अपने आप को सीमित कर देते हैं जो हमें किसी वैज्ञानिक प्रक्रिया के बजाय उन स्रोतों पर निर्भर होना ज्यादा सिखाता है।

विभिन्न स्रोतों मसलन किताबें, व्यक्ति या जगह से प्राप्त जानकारियों को हम ज्ञान का पुलिंदा मानकर चलते हैं और ऐसे स्रोतों को हम आधिकारिक स्रोत के रूप में देखते हैं। यह हमें इतना दृढ़ कर देते हैं कि हम अपने आपको सीखने की प्रक्रिया में शामिल ही नहीं कर पाते और इस तरह हम किसी वैज्ञानिक प्रक्रिया को समझने के बदले उसे याद कर डालते हैं, रट डालते हैं।

3. हम सोचते हैं कि विज्ञान सबके लिए नहीं है और वैज्ञानिक विधियाँ कुछ खास क्षेत्रों में ही सीमित रह जाती हैं।

विज्ञान में जो हम सीखते हैं या पढ़ते हैं कई बार वह किताबों तक ही सीमित रह जाता है। हमारे जीवन के उतार चढ़ाव में उन सीखी हुई बातों या ज्ञान का कहीं उपयोग नहीं दिखता। ऐसे में हम स्वतः ही अपने आपको विज्ञान सीखने की प्रक्रिया से खारिज करते चले जाते हैं और सोचते हैं कि विज्ञान तो केवल चिकित्सा या अभियांत्रिकी पढ़ने के लिए ही है।

ऊपर दिये गए बुनियादी कारणों को ध्यान में रखते हुए और पिछले 4 सालों से शिक्षकों से लगातार

बात करते हुए हमने पाया कि इन कारणों को सबसे पहले गहराई से समझने की जरूरत है। क्या वाकई में विज्ञान शिक्षण यही है, या इसके इतर बहुत कुछ और है?

इस प्रयास में ही अजीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन द्वारा शिक्षकों के पेशेवर क्षमतावर्धन की दिशा में लगातार और गहनता के साथ जुड़कर किया जाने वाला प्रमुख प्रयास, विषय आधारित शिक्षक सर्वर्धन कार्यशाला है। इन कार्यशालाओं में संवाद के दौरान शिक्षकों को नवाचार अपनाने के लिए प्रेरित करना, उनके आत्मविश्वास को बढ़ावा देना शामिल है। साथ ही विज्ञान शिक्षण के प्रति उनकी गंभीरता तथा शिक्षण प्रक्रिया में आने वाली चुनौतियों से संबन्धित कई पहलुओं को जानकर या विषय शिक्षण को कैसे विषय के प्रति के अनुरूप बनाया जाए, इस पर गहन चर्चा की आवश्यकता भी महसूस होती है।

इसी कड़ी में हमने शिक्षकों से बात की और पाया कि विज्ञान शिक्षण का एक प्रमुख उद्देश्य हमारे बच्चों को सवाल उठाने, प्रयोग करने और सोचने के नए वैज्ञानिक तरीकों का विकास करने को प्रेरित करना है। उच्च प्राथमिक स्तर की पूरी अवधि में प्रक्रिया कौशलों पर ज्यादा जोर हो ताकि बच्चा खुद के पहलकदमी से, अपने स्तर पर ही कैसे सीखें, यह सीख सकें।

उक्त संदर्भ को ध्यान में रखते हुए और धमतरी की शिक्षक शिक्षा कार्य योजना के अंतर्गत शिक्षकों की क्षमतावर्धन हेतु मांग अनुरूप पहल तय किए गए। इसमें जिले के उच्च प्राथमिक शिक्षकों के लिए विषयवार, अवधारणा आधारित कार्यशालाओं का आयोजन एवं बाद में विद्यालयों तक उसका फॉलोअप “स्वैच्छिक शिक्षक मंच (अवसनदजंतल जमंबीमते वितनउ-टज्)” प्रमुखता में है।

इसी तारतम्य में “वीटीएफ़ एक अवधारणा” को मजबूत करने की कोशिश में जुड़ गए हम सभी—चाहे वो फ़ाउंडेशन के साथी हो या हमारे शिक्षक साथी।

सभी ने मिलकर इस दिशा में कदम बढ़ाने का ठाना, और इसकी शुरुवात हुई फोन द्वारा अकादमिक चर्चा। धीरे धीरे इस चर्चा से ऊर्जा मिलने लगी, जिले के कुछ शिक्षकों के साथ मिलकर न केवल अवधारणा बल्कि कक्षागत प्रक्रिया को मजबूत कैसे बनाए, कक्षा की व्यवस्था कैसे हो कि विज्ञान विषय को उसकी प्रति के अनुसार पढ़ने या पढ़ाने का माकूल माहौल मिल सके आदि पर गहन चर्चा निरंतरता के साथ होती रही। फोन पर बात करते हुए, एक निश्चित अंतराल में बैठक की आवश्यकता भी महसूस की गयी ताकि सभी विज्ञान शिक्षण में किए गए अपने प्रयास, सीख, चुनौतियों आदि का साझा कर सकें, और इस तरह से वीटीएफ़ एक फोरम का उदय हुआ।

इस वीटीएफ़ के लिए प्रारम्भिक तैयारी के साथ “एक शिक्षक” के साथ इस पर चर्चा की गयी। उन्होंने अपने भी फीडबैक को शामिल करते हुए अंततः वीटीएफ़ को संचालित करने की पूरी तैयारी का जिम्मा लिया ताकि वो एक सुविधादाता के तौर पर समुह के साथ काम कर सकें।

### पहली मुलाकात

सुविधादाता ने अपनी बातचीत एक सवाल से शुरू की जिसमें उन्होंने उपस्थित शिक्षक समूह से पूछा कि कक्षा में “प्रकाश” पढ़ाते हुए क्या अनुभव हुए हैं, बच्चे किस तरह के सवाल करते हैं, और प्रकाश संबंधी बच्चों के पहले के अनुभव या ज्ञान किस तरह के हैं। ऊपर जिन सवालों का उल्लेख किया है, वो इसी संवाद के हिस्से हैं। बच्चों के उत्तर किस प्रकार के होते हैं इस पर कुछ प्रतिक्रियाएँ इस तरह से आई कि वस्तु को देखने के लिए आँख, लेंस, रोशनी, कैमरा, सूक्ष्मदर्शी, वस्तु की आवश्यकता होती है।

अधिकतर शिक्षकों का ये कहना था कि किसी भी वस्तु को देखने के लिए किसकी आवश्यकता होती है, पूछने पर ज्यादातर बच्चे आँख कहते हैं। इस

स्थिति में एक शिक्षक ने बताया कि वो दूसरा सवाल कक्षा में करते हैं— अगर आँख ही देखने में सहायक है तो क्या बता सकते हो कि दीवार की दूसरी तरफ क्या है? इस तरह बातचीत के माध्यम से रोशनी तक पहुँचते हैं। फिर और भी सवाल आते हैं जैसे रोशनी क्या है, रोशनी कहाँ से आती है, सूरज तो बहुत दूर है फिर उसकी रोशनी कैसे पहुँचती है, सूरज की रोशनी सर्वप्रथम कैसे पहुँचती है, अगर सूरज नहीं होता तो क्या होता आदि।

सवाल करना विज्ञान अध्ययन और शिक्षण का प्रमुख कौशल है क्योंकि जिज्ञासा एवं प्रश्नों की जगह बनाने पर जोर देने से ही वैज्ञानिक ज्ञान निर्माण, ज्ञान के पुष्टीकरण, वैज्ञानिक प्रक्रियाओं एवं विधियों को प्रदर्शित या समझने में मदद मिलती है। सुविधादाता ने प्रकाश का एक गुण “प्रकाश सीधी रेखा में चलता है” को बतौरतथ्य लेते हुए इसे लगभग तीन गतिविधियों के माध्यम से समझने की कोशिश की। गतिविधियों के बारे में विस्तृत वर्णन इस प्रकार है:

### मोमबत्ती की लौ और कागज की बनी नली—

इस गतिविधि के लिए समाचार पत्र से कागज की नली बनाई गयी और सामने जल रही मोमबत्ती के लौ को फोकस करने को कहा। जब लौ दिखने लगी तो प्रतिभागियों से पूछा गया कि अगर नली को कुछ इस तरह से मोड़ा जाए कि उसका मुँह बंद न हो वो खुला रहे पर नली मुड़ जाए, क्या तब भी लौ दिखाई देती है? ज्यादा अच्छे से समझने के लिए पाठक चित्र द्वारा समझ सकते हैं।

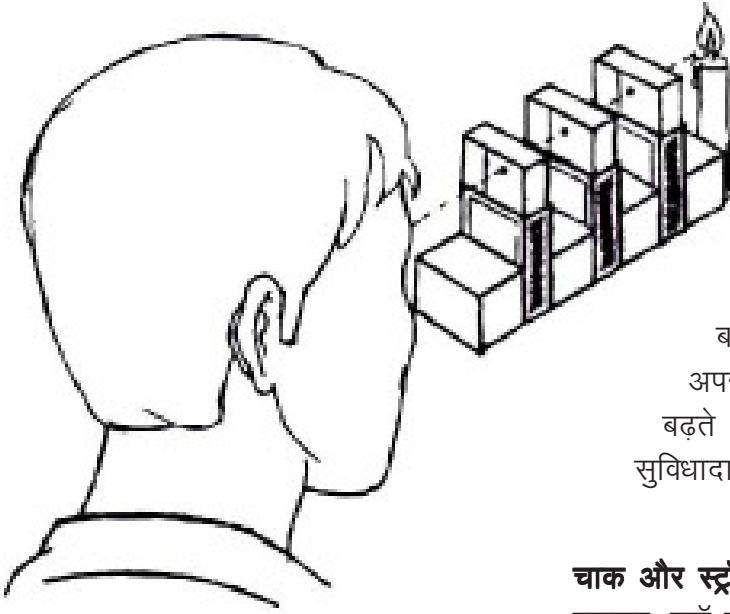
इस दौरान जो चर्चा में खुलकर आए वे बिन्दु थे कि कक्षा शिक्षण की प्रक्रिया में बातचीत द्वारा बच्चों के पूर्वज्ञान के माध्यम से प्रकाश संबंधी उनके विचार, सवाल और जिज्ञासा को जानना। फिर सीधे गतिविधि करना, और इन दोनों के बीच चर्चा। बातचीत में कुछ बातें सामने आईं जैसे गतिविधि के



महत्व को समझाना, गतिविधि करके मूल अवधारणा को समझना या पहले मूल अवधारणा बताकर उस पर आधारित गतिविधि करवाना। पूरे समूह ने ये महसूस किया, कि हमें कोई भी गतिविधि या प्रयोग या कोई मॉडल बनवाने बनाने के पहले एक चर्चा की जरूरत पड़ती है जो अध्ययनकर्ता को अवधारणा के साथ जोड़ पाये। इस बीच एक प्रतिभागी द्वारा संवाद में यह भी जोड़ा गया कि घरों के छप्पर से आने वाली पतली रोशनी और यह गतिविधि काफी कुछ एक दूसरे से मिलती है और प्रकाश के सीधी रेखा में चलने को इंगित भी करती है। कुछ सवाल इस तरह से रखे गए कि गतिविधि एक में लिए गए कागज की नली की लंबाई कम या ज्यादा या नली के अनुप्रस्थ काट के व्यास कम या ज्यादा होने से क्या प्रकाश के गुण के अध्ययन में कोई फर्क पड़ेगा या देखने की प्रक्रिया में किसी तरह का कोई भी बदलाव होगा? इसी तरह अगर इस नली को स्थिर रखके, वस्तु को दूर या पास रखा जाए तब क्या फर्क पड़ेगा ?

### माचिस के खाली डिब्बे और मोमबत्ती की

लौ— दूसरे गतिविधि के लिए माचिस के तीन खाली डिब्बों की जरूरत पड़ी। माचिस के डिब्बे में दो हिस्से होते हैं, एक उपर वाला खोखा और एक नीचे वाली ट्रे। तीनों माचिस के डिब्बे के नीचे पतली सुई की सहायता से छेद करने को कहा गया। एक



कारण ट्रे में किया गया छेद सीधी लाइन पर नहीं थे। थोड़ी देर के डिब्बे गिरने-उठाने की कसरत के बाद वह वह भी समझ पाई कि छेद को सीधे लाइन में लाना होगा तभी मोमबत्ती की लौ दिखाई देगी। एक शिक्षक ने जोड़ते हुए कहा कि ऐसे गतिविधि में बच्चों को बहुत आनंद आता है और वो खुद अपने स्तर पर प्रयास करते हुए आगे बढ़ते जाते हैं। वहाँ शिक्षक सिर्फ एक सुविधादाता के तौर पर होता है।

मोमबत्ती को जलाया गया और सभी प्रतिभागी शिक्षकों से माचिस के डिब्बों को इस तरह जमाने के लिए कहा गया कि इन डिब्बों के कतार में से अंतिम डिब्बे के ट्रे के छेद से अगर देखा जाए तो मोमबत्ती की लौ दिखाई दे। शिक्षकों में डिब्बो को जमाने का उत्साह देखने लायक था और उन्होंने बहुत ही कम समय में ऐसा कर भी लिया। डिब्बों को करीने से इस तरह जमाया गया कि तीनों डिब्बे के छेद से सीधे मोमबत्ती का लौ दिखाई पड़ रही थी। हमारे प्रतिभागियों में से एक बच्ची मेघा (एक प्रतिभागी शिक्षिका की बिटिया) ने भी इसे देखने की कोशिश की, इस बीच माचिस के डिब्बे गिर गए। अब फिर से जमाना मतलब एक छोटा सा प्रयास और। रुचिकर था ये देखना कि मेघा डिब्बों को जमाती है या नहीं?

उसने डिब्बों को फिर से जमाया पर इस बार तीनों डिब्बे के छेद एक सीध में नहीं थे। ये कुछ ऐसा ही था जैसे कागज के नली को मोड़ देना। दरअसल सारे ट्रे एक ऊंचाई से नहीं जम पाये थे, जिसके

**चाक और स्ट्रॉ-** इस गतिविधि में चाक को खड़े रखकर, स्ट्रॉ को क्षैतिज दिशा में रखना था। स्ट्रॉ को ऐसी स्थिति में लाना था कि चाक स्ट्रॉ के छेद से दिखाई दे। चर्चा के समय शिक्षकों ने जोड़ा कि यदि वस्तु स्ट्रॉ के सामने है तो ही दिखाई देगी। कुछ सवाल इस तरह से भी आए कि अभी तो स्ट्रॉ के अंदर हवा है, यदि इसे किसी और पदार्थ से भर दिया जाए तो क्या तब भी स्ट्रॉ से चाक दिखाई देगा?

तब पारदर्शी और अपारदर्शी वाला मामला भी सामने आया। बातचीत में यह भी आया कि कैसे जुड़ता है उस अनुभव से जिसमें एक शिक्षक साथी ने अपने बच्चो से सवाल किया था कि आँख रहते हुए भी क्या दीवाल के दूसरे पार की चीज़ दिखाई देगा? एक रोचक सवाल यह भी आया कि सूरज की रोशनी धरती पर पहुँचती है, तो क्या इसका मतलब यह भी हुआ कि दोनों के बीच जो भी है सब पारदर्शी है। एक और शिक्षिका साथी ने इसे बताया कि किस तरह निर्वात और वायुमंडल में से होते हुए सूरज की रोशनी धरती पर पहुँचती है जिसमें जरूरी नहीं कि सूरज की रोशनी पूरे समय सीधे चलता रहे। तो इस तरह बातचीत करते हुए यह बात भी आई कि निर्वात में प्रकाश तेजी से चलता

है, मतलब माध्यम का बड़ा योगदान है प्रकाश को समझने में। सवाल यह भी आया कि यदि कमरे के हवा को पूरी तरह से बाहर निकाल दे तो निर्वात हो जाएगा, तब प्रकाश के स्वभाव में कोई अंतर आएगा क्या? तीनों गतिविधि करते समय यह भी बातचीत किया गया कि कक्षा में कैसे उचित प्रबंधन किया जाए कि हर बच्चे को सीखने के अवसर प्राप्त हो। कुछ विचार इस तरह से आए जैसे समूह कार्य, साथ में अधिगम की प्रक्रिया को बढ़ावा देना, शुरुवात में दिक्कत आती है, पर जैसे जैसे बच्चों में रोचकता आने लगती है, काम आसान हो जाता है जहां वे ही नेतृत्व करते हैं। इस चर्चा के बाद समूह को प्रकाश संबंधी एक आलेख पढ़ने को दिया गया जिसमें समूह से कहा गया कि इस आलेख में प्रकाश के कौन से गुण स्पष्ट समझ आ रहे हैं, कौन सी घटना और परिघटना का जिक्र है, उसे नोट करें?

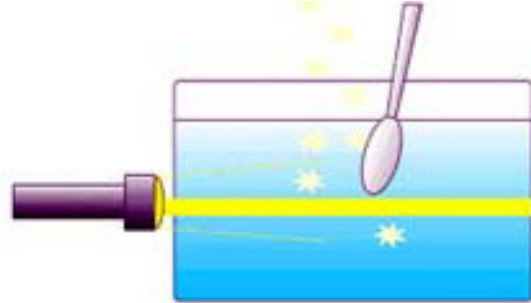
इसे पढ़ने के बाद पाठकों के कुछ प्रतिक्रियाएँ आई जो इस तरह से हैं—

- प्रकाश फैलता है,
- अपारदर्शी वस्तु के आने से परछाई बनती है,
- प्रकाश को हाथ से नहीं पकड़ पाते हैं,
- श्व प्रकाश कई रंगों से मिलकर बना है,
- प्रकाश के कारण ही रंगों को देख पते हैं,
- प्रकाश के अनेक स्रोत हैं,
- आग में प्रकाश और ऊष्मा दोनों हैं,
- तड़ित भी प्रकाश का एक स्रोत है,
- कुछ घटना जैसे अमावस्या का उल्लेख है,
- प्रकाश संश्लेषण संबंधी परिघटना का उल्लेख है।

इस दौरान शिक्षकों से यह भी बात किया गया कि किस तरह छोटे छोटे कहानी या आलेख का सहारा लेकर भाषायी कौशलगत दक्षता को बढ़ाया जा सकता है ताकि विद्यार्थी पढ़े हुए या समझे हुए

अवधारणा को अपने दूसरे साथी के साथ अनेक माध्यमों का इस्तेमाल करते हुए साझा कर सके। इस बीच यह चर्चा भी बड़ा रोचक था कि कैसे खास समय पर ही सूर्य का प्रतिबिंब अच्छे से दिखता है और कड़ी दोपहर में सूर्य का प्रतिबिंब देख पाना मुश्किल होता है।

सुविधादाता ने आलेख का सहारा लेते हुए और प्रकाश के सीधी रेखा में चलने संबंधी बातचीत को समेकित करते हुए एक प्रयोग और किया जिसमें उन्होंने पानी में सेवलान डालकर बाहर से लेसर टॉर्च के प्रकाश को विलयन से निकलते हुए दिखाया। सभी प्रतिभागियों ने भी यह प्रयोग किया। इस प्रयोग को करते हुए कुछ सवाल आए जिस पर चर्चा अगली वीडियो में करने का सोचा गया। जैसे किस रंग के पानी में प्रकाश पुंज या किरण अच्छे से दिखेगा, इस प्रक्रिया में प्रकाश कितने



माध्यम से होकर गुजर रहा है, विलयन का गाढ़ा या हल्का होने से क्या प्रकाश पुंज या किरण के दिखने की तीव्रता में कोई फर्क पड़ेगा, इत्यादि। बहुत समय तक तो एक अनसुलझा सवाल और था, जिसमें आने वाले समय में चर्चा होगी और वो सवाल था क्या प्रकाश पदार्थ है? हाँ तो कौन सा पदार्थ है, नहीं तो फिर क्या है ?

लेकिन यह चर्चा यही समाप्त नहीं होता। कार्यशाला के माध्यम से शुरू हुई इस सीखने-सिखाने की प्रक्रिया की निरंतरता को बनाए रखने तथा आपसी समझ को आधार बनाकर विद्यालय की प्रक्रियाओं को और करीब से समझते हुए विद्यालय विकास

योजना को परिणति तक पहुंचाने के क्रम में इस चर्चा को कुछ सवालियों के साथ रोका गया, जो लगभग हर गतिविधि के साथ लिखा हुआ है। अगली बैठक के पहले, सबने फोन द्वारा सवालियों पर चर्चा करने का सोचा जिसके लिए एक तारीख तय की गयी और अगली चर्चा के लिए “अपवर्तन” एक अवधारणा चुना गया, जो माध्यम बदलने के साथ प्रकाश के गुण में आए बदलाव को बताता है।

इस पूरी बातचीत को रखने का उद्देश्य केवल एक वीटीएफ का जिक्र करना नहीं है, बल्कि ऐसे पहल को उजागर करने का प्रयास है जहां शिक्षक साथियों को अपने विचारों को साझा करने का मंच मिलता है। समझे हुए बातों को अपने विचारों में लाना और दूसरे शिक्षकों के साथ साझा करना भी विज्ञान शिक्षण का प्रमुख कौशल है जो इस बात की वकालत करता है कि किसी भी तथ्य की व्याख्या करने के लिए किया गया बातचीत पाठक या श्रोता के उम्र और समझ अनुरूप करने के लिए सरल बनाया जाए पर इतनी सरल भी ना हो जाए कि मूल बात कहीं खो जाए। विज्ञान शिक्षण में जितनी आवश्यक गतिविधि है, उतना ही आवश्यक है कि लिखित सामग्री का इस्तेमाल हो जिसे पढ़कर सीखे हुए अवधारणा को पक्का किया जा सके और उससे संबंधित अन्य अवधारणाओं का भी जुड़ाव देखने का गुंजाइश बना रहे। इस वीटीएफ में यही जिक्र है।

इस बातचीत को यहाँ रखने का एक आशय और है कि किसी भी विषय में क्षमतावर्धन के लिए कोई एक कार्यशाला पर्याप्त नहीं होता बल्कि यह एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है जहां एक अवधारणा से संबंधित कुछ ज्यादा गहराई से बातचीत की जाए, और कक्षागत प्रक्रिया में आने वाले चुनौतियों को सबके सामने रखा जाए। साथ ही यह भी कि इन वीटीएफ में प्रकाश को इस स्वरूप में समझना, शिक्षक साथियों को, जहां एक नयी अवधारणात्मक दृष्टि दे रहा था वहीं बच्चों के

साथ काम करते हुए उन्हें करके सीखने के आनंद और अपने आसपास विज्ञान को देखपाने के रोमांच के साथ बेहतर समझ बनाने में मदद भी कर रहा था।

इसी मंच पर ऐसे कई शिक्षकों के साथ रूबरू होने का मौका भी मिला, जो तमाम चुनौतियों से जूझते हुए बेहतर कार्य करते हैं और बेहतरी की दिशा में आगे बढ़ते जाते हैं। ऐसे शिक्षक, इस कार्यशाला में दूसरे शिक्षकों के लिए प्रोत्साहन और प्रेरणा देने का कार्य करते हैं।

लेकिन कार्यशाला के साथ वीटीएफ की चर्चा यही समाप्त नहीं होता। कार्यशाला के बाद वीटीएफ के माध्यम से शुरू हुई इस सीखने-सिखाने की प्रक्रिया की निरंतरता को बनाए रखने तथा आपसी समझ को आधार बनाकर विद्यालय की प्रक्रियाओं को और करीब से समझते हुए विद्यालय विकास योजना को परिणति तक पहुंचाने के क्रम में हमारी आगामी गतिविधियां इस प्रकार हैं –

- हम लगातार शालाभ्रमण के द्वारा शाला विकास प्रक्रिया में सहयोग करने का प्रयास करते हैं जिससे कि शाला को और भी बेहतर संस्थान के रूप में विकसित किया जा सके।
- संकुल एवं शाला स्तरीय मासिक बैठक में शाला विकास योजना, अवधारणाओं पर आधारित अकादमिक मुद्दों पर चर्चा जैसी गतिविधियों को नियमित प्रक्रिया के रूप में स्थापित करने की दिशा में प्रयास करना।
- संकुल अकादमिक समन्वय का एक अकादमिक प्रतिनिधि के तौर पर विकास, तथा संकुल और विकास खंड स्तर पर शिक्षकों का एक अकादमिक मंच की तरफ पहल कर पाना जहां शिक्षक साथी अपने विषय से संबंधित चुनौतियों को खुलकर रख सके और बेहतर अकादमिक प्रयास को एक दूसरे के साथ साझा कर सकें।